मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

'इंडिया' के मुकाबले मोदी का टिक पाना असंभव 2
'नफरत की कांग्रेसी दुकान' है उदय भान का बयान 4
'इंडिया' का इस्तेमाल रोकने की सरकारी कवायद 5
बेलसोनिका यूनियन रजिस्ट्रेशन रद्द करने का पुरजोर विरोध 6
शिलान्यास एक्सपर्ट मुख्यमंत्री ने यमुना नगर में मेडिकल कॉलेज का पत्थर रखा 8

वर्ष 37 | अंक -46 | फरीदाबाद | 1-7 अक्टूबर 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

केन्द्रीय मंत्री गडकरी ने अवैध मैट्रो कैंसर इंस्टीट्यूट का उद्घाटन किया

मैट्रो अस्पताल के इस विस्तार को प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, दमकल विभाग से नहीं मिली है एनओसी

हूडा ने उद्घाटन से पहले आनन फानन जारी किया ऑक्यूपेशन सर्टिफिकेट, क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट अनुमति भी नहीं मिली

मालिक, डॉ. पुरुषोत्तम लाल

फ़रीदाबाद (मज़दूर मोर्चा) नियम कानूनों को धता बताते हुए पैसे के दम पर स्थापित किए गए मैट्रो कैंसर इंस्टीट्यूट का उद्घाटन केंद्रीय सड़क मंत्री नितिन गडकरी ने बड़ी धूमधाम से किया। कद्दावर केंद्रीय मंत्री के उद्घाटन करने का असर यह रहा कि जो अधिकारी मानक और नियम पूरे नहीं होने के कारण कैंसर अस्पताल के संचालन की अनुमति नहीं दे रहे थे, वे संस्थान के धनपशु मालिकों के आगे न केवल नतमस्तक बल्कि रेंगते हुए नजर आ रहे हैं। प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, दमकल और स्वास्थ्य विभाग से एनओसी भी नहीं ली गई। यहां तक कि कैंसर इंस्टीट्यूट के लिए क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट की अनुमति भी नहीं मिली। तमाम कमियों के बावजूद केंद्रीय मंत्री के आने से पहले हूडा से ऑक्युपेशन

सर्टिफिकेट जारी करा लिया गया। इतनी धांधली के बावजूद नितिन गडकरी ने कैंसर मरीजों को लूटने के लिए लालायित मालिकों की खुशी के लिए उद्घाटन कर दिया।

सेक्टर 16ए स्थित मेट्रो अस्पताल प्रबंधन ने कैंसर में मोटी कमाई देखते हुए वर्ष 2016 में कैंसर यूनिट बनाने के लिए अस्पताल का विस्तार करने की योजना बनाई थी। इसके लिए उन्होंने प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से कंसेंट टू इस्टेब्लिश (निर्माण की सहमति, सीटीई) के लिए आवेदन किया था लेकिन निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ। अप्रैल 2021 में अस्पताल प्रबंधन ने दोबारा सीटीई के लिए आवेदन किया। निर्माण स्थल पर वायु और भूजल प्रदूषण नियंत्रण के संबंध में कोई उपाय नहीं होने के कारण प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने अस्पताल प्रबंधन को कारण बताओ नोटिस जारी किया। कोई जवाब नहीं मिलने के कारण बोर्ड ने सीटीई जारी नहीं की।

बावजूद इसके धनपशु मालिकों ने नियम ताक पर रख कर नए ब्लॉक का निर्माण कर डाला। करीब एक साल पहले से इस यूनिट में मरीज भर्ती भी किए जा रहे थे। भ्रष्टाचार का आलम ये रहा कि हूडा ने ऑक्युपेशन सर्टिफिकेट (ओसी) जारी भी नहीं किया और नगर निगम के खाऊ कमाऊ अधिकारियों ने इस अवैध इमारत को सीवर व पानी का कनेक्शन जारी कर दिया। हूडा ने भी कोई आपत्ति नहीं की, जाहिर है कि धनपशु मालिकों ने सीवर पानी कनेक्शन के लिए पैसे के बल पर सभी अधिकारियों की स्वीकृति हासिल की।

भरोसेमंद सूत्रों के अनुसार इमारत के निर्माण में बिल्डिंग बायलॉज़ का उल्लंघन किया गया है, इस कारण दमकल विभाग एनओसी जारी नहीं कर रहा था। सूत्रों के अनुसार दमकल विभाग केवल तीस मीटर ऊंची कॉमर्शियल इमारत को ही एनओसी जारी करता है लेकिन अस्पताल की यह नई बिल्डिंग तीस मीटर से अधिक ऊंची है, इस कारण एनओसी जारी नहीं की जा रही थी। बताते चलें कि नितिन गडकरी से उद्घाटन कराए जाने की बात सामने आते ही हूडा अधिकारियों ने ऑक्युपेशन सर्टिफिकेट भी जारी कर दिया जबकि इससे पहले आपत्तियां लगाई जा रही थीं।

प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की आपत्तियों को किनारे कर बिना सीटीई लिए ही अस्पताल प्रबंधन ने इमारत बना डाली और उसमें मरीज भी भर्ती करने शुरू कर दिए। नियमानुसार अस्पताल की नई इमारत में तब ही काम शुरू हो सकता है जब प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड से उसे कंसेंट ऑफ ऑपरेट (संचालन की सहमति, सीटीओ) जारी किया गया हो। सीटीई का पालन नहीं होने के कारण बोर्ड ने सीटीओ भी नहीं जारी किया है।

शहर के कमल सिंह का आरोप है कि अभी स्वास्थ्य विभाग से कैंसर अस्पताल के संचालन के लिए क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट का पंजीकरण भी नहीं हुआ है। उनके अनुसार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी के इलाज में इस्तेमाल होने वाले खतरनाक रेडियोएक्टिव तत्वों वाली मशीनों के इस्तेमाल से लेकर उनके रखरखाव के

शेष पेज चार पर

पार्टी विद डिफरेंस के नेताओं में दिख रहा डिफरेंस

केंद्रीय सड़क मंत्री से मिलने सिर्फ तिगांव विधायक राजेश नागर पहुंचे, किशन पाल गूजर के लगुए भगुए विधायक गडकरी के नज़दीक नहीं फटके

फ़रीदाबाद मज़दूर मोर्चा। पार्टी विद डिफरेंस का राग अलापने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भाजपा में आपसी डिफरेंसेज होने के कारण जन प्रतिनिधि ही एक साथ नहीं हैं। सोमवार को मैट्रो नामक व्यापारिक अस्पताल का उद्घाटन करने आए केंद्रीय सड़क मंत्री नितिन गडकरी से मिलने न तो केंद्रीय राज्यमंत्री किशन पाल गूजर पहुंचे और न ही उनके चमचे विधायक। एकमात्र तिगांव विधायक राजेश नागर ही नितिन गडकरी से मिले और उन्होंने किशनपाल

नितिन गडकरी से मंझावली पुल बनवाने की मांग कर राजेश नागर ने किशनपाल गूजर को दी चुनौती

की दुखती रग यानी मंझावली पुल पर हाथ रख कर पार्टी में पल रही गुटबंदी उजागर कर दी।

नरेंद्र मोदी की पहली पारी में उनके करीबी किशन पाल गूजर ने केंद्रीय सड़क राज्यमंत्री का दर्जा हासिल कर लिया था। तब छह सौ करोड़ की लागत से बन रहे दिल्ली-आगरा सिक्स लेन हाईवे के ठेकेदार से दस प्रतिशत कमीशन मांगने के आरोप पर किशन पाल को इस मंत्रालय

शेष पेज चार पर

मोदी की "ईमानदारी" का किस्सा

कृष्णकांत

प्रधानमंत्री की नजर आरबीआई के जमा पैसे पर थी। उर्जित पटेल गवर्नर थे। अर्थव्यवस्था की रक्षा को अपना धर्म समझते होंगे। मोदी जी की "चौकीदारी" चल नहीं पा रही थी। पूर्व वित्त सचिव सुभाष चंद्र गर्ग का दावा है कि 14 सितंबर 2018 को मीटिंग हुई। मोदी जी उर्जित पटेल पर भड़क गए, आपा खो दिया और उनकी तुलना "खजाने पर बैठे सांप" से कर दी। कुछ समय बाद उर्जित पटेल पद छोड़कर भाग गए। 2019 में आरबीआई ने अपनी लगभग 1.76 लाख करोड़ लाभांश और सरप्लस पूंजी सरकार को सौंप दी।

उर्जित पटेल, वायरल आचार्य, अरविंद सुब्रह्मण्यम, केवी सुब्रह्मण्यम, सुरजीत भल्ला, अरविंद पनगढ़िया - इतने सारे अर्थशास्त्री पद छोड़कर क्यों भागे? क्योंकि चौकीदार को खजाना चाहिए था और कोई अर्थशास्त्री नहीं चाहता था कि उसे नाग बताकर उसका लोया कर दिया जाए। महामानव की ईमानदारी की पवित्र कथा समाप्त हुई। इस कथा को घर-घर पहुंचाइए। जैसे अडानी के अच्छे दिन आए, वैसे आपके भी आएंगे।